## की प्रप्ति भी होती है

# पुरश्चरण प्रयोग

## को सम्पन्न करें एवं अनुभव करें

**र**सोल्लास तंत्र अपने आप में अत्यंत गोपनीय और महत्वपूर्ण तंत्र रहा है, जो कि शिष्य को पूर्णता तक पहुँचाने की क्रिया का आधार है। इस तंत्र में यह बताया गया है कि यदि कोई शिष्य बार-बार साधना में असफल हो रहा हो या उसे अपने जीवन में पूर्णता प्राप्त नहीं हो रही हो अथवा किसी प्रकार की बाधा या अड़चन आ रही हो तो उसे पुरश्चरण प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए।

## पुरश्चरण क्या है ?

साधना में सिद्धि और सफलता के लिए तीन प्रकार की बाधाएं शिष्य या साधक के सामने उपस्थित होती है। (1) पूर्वजन्म के किये गये दोषों की वजह से या पूर्व जन्म में गुरु अनादर आदि से जो दोष व्याप्त होता है, वह पुरश्चरण प्रयोग से ही समाप्त होता है। (2) यदि वर्तमान जीवन में देवताओं के प्रति अनादर या गलत तरीके से मंत्र जप आदि किया हो तब भी साधना दोष व्याप्त होता है और इस दोष को भी पुरश्चरण प्रयोग से ही दूर किया जा सकता है और (3) वर्तमान जीवन में यदि मन में गुरु के प्रति निरादर रहा हो, उनके सामने अभद्रता या असौम्यता प्रदर्शित की हो या मन में गुरु के प्रति अपशब्द, अपमान आदि भावनाएं व्यक्त हुई हो तब भी साधक या शिष्य को दोष व्याप्त होता है और इसके लिए भी पुरश्चरण प्रयोग को ही सर्वश्रेष्ठ उपाय बताया है।

कहते हैं, कि जब विष्णु का बाणासुर से युद्ध हो रहा था, तब स्वयं भगवान शिव बाणासुर के पक्ष में आकर खड़े हो गये, उस समय भगवान विष्णु ने पुरश्चरण प्रयोग सम्पन्न कर भगवान शिव से युद्ध किया और उन्हें पराजित कर बाणासुर की भुजाएं काट डाली।

इसी प्रकार एक बार शिव ने स्वयं भस्मासुर को यह वचन दे दिया कि तू जिसके सिर पर भी हाथ रखेगा वह भस्म हो जायेगा और भस्मासुर ने भगवान शिव के ऊपर ही हाथ रख कर उसे भस्म कर देना चाहा, जिससे कि पार्वती को प्राप्त कर सके, ऐसी स्थिति में जब भगवान शिव विष्णु के पास पहुँचे तो विष्णु ने पुरश्चरण प्रयोग सम्पन्न कर भस्मासुर के सामने मोहिनी रूप धारण कर उसे स्वयं अपने ही हाथों भस्म करवा दिया।

वास्तव में ही पुरश्चरण प्रयोग प्रत्येक साधक और शिष्य के लिए आवश्यक है। इस तंत्र में तो यहां तक बताया गया है कि प्रत्येक पूर्णिमा को महीने में एक बार अवश्य ही इस प्रकार का प्रयोग सम्पन्न कर देना चाहिए, जिससे कि उस महीने में जो भी दोष व्याप्त हुए हो वे समाप्त हो सके और साधना में सफलता प्राप्त हो सके।

भगवान शिव ने स्वयं पार्वती को समझाते हुए कहा है कि प्रत्येक साधना में सिद्धि अवश्य ही प्राप्त हो सकती है, यदि साधना से पूर्व पुरश्चरण प्रयोग संपन्न कर लिया जाए। जो तंत्र साधक है, जो तंत्र के क्षेत्र में अथवा साधना के क्षेत्र में पूर्णता प्राप्त करना चाहते है, उनके लिए तो यह पुरश्चरण पद्धति वरदान स्वरूप है। यह प्रयोग एक ऐसा रत्न है, जिसके द्वारा प्रत्येक साधना में अवश्य ही सिद्धि प्राप्त होती है।

*एतत् तन्त्रानुसारेण पुरश्चर्यां करोति यः।*
*स सिद्धिः स गणः सौ पि विष्णुर्न च संचयः॥*

अर्थात् जो इस प्रकार के उच्चकोटि के पुरश्चरण तंत्र को जानकर किसी भी साधना से पूर्व यह पुरश्चरण प्रयोग सम्पन्न कर लेता है, वह पूर्ण रूप से सिद्ध होता है और दूसरे शब्दों में वह स्वयं विष्णु स्वरूप बन जाता है, इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं।

उच्चकोटि के योगियों और संन्यासियों ने भी यह स्वीकार किया है कि कई कारणों से जीवन में साधनाओं में सफलता नहीं मिल पाती, इसमें इस जन्म और पूर्व जन्म के दोषों की वजह से बाधाएं आती रहती है, जब तक इन बाधाओं तथा दोषों को दूर नहीं किया जाता, तब तक साधना में सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती और इन दोषों को दूर करने का कोई अन्य उपाय नहीं है, केवल मात्र एक ही उपाय है 'पुरश्चरण तंत्र' या दूसरे शब्दों में पुरश्चरण प्रयोग जिसकी वजह से साधना में सिद्धि और सफलता प्राप्त हो पाती है।

## पुरश्चरण प्रयोग कब करे ?

प्रश्न यह उठता है कि किस मुहूर्त में कब यह प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए जिससे कि सभी जन्मों के दोष दूर हो सके और जीवन तथा शरीर शुद्ध, निर्मल, पवित्र एवं दिव्य बन सके।

इसके लिए इसी तंत्र में स्पष्ट रूप से बताया गया है-

*न तंत्र काल-नियमः शुद्धाशुद्ध वरानने।*
*न रिक्ता न च मुद्रा च पुरश्चरण कर्मणि॥*
*न तंत्र चंचलापांगि मल मासं विचारयेत्*
*जप कालो महेशानि कोटि सूर्य ग्रहः समः॥*

भगवान शिव ने पार्वती को संबोधित करते हुए

पुरश्चरण पद्धति के बारे में कहा है कि हे चंचल नेत्र वाली पार्वती! इस पुरश्चरण प्रयोग को करने के लिए समय का कोई नियम नहीं है, इस प्रयोग में शुद्ध और अशुद्ध का कोई विचार नहीं है इन प्रयोग में यदि रिक्ता तिथि या भद्रा जैसी अशुभ तिथियां भी हो तब भी कोई दोष नहीं लगता, यदि ऐसे समय में मल मास या अधिक मास चल रहा हो, तब भी विचार नहीं करना चाहिए। हे, पार्वती! यह बिल्कुल सही है, कि यह प्रयोग साधक सही ढंग से सम्पन्न कर लेता है, तो करोड़ों सूर्य के समान उसको फल मिलता है और वह सभी दृष्टियों से पूर्ण सिद्धि प्राप्त कर लेता है।

## साधना कैसे करें

भगवान शिव ने इस साधना प्रयोग को समझाते हुए बताया है कि साधक प्रातः काल स्नान कर पूर्ण विधि विधान के साथ संध्या करे और गायत्री मंत्र का जप करें, जप के बाद वह साधक भगवान सूर्य को जल से अर्घ्य दे, और लाल वस्त्र धारण कर कोमल आसन पर बैठ जाय और प्राणायाम करे।

इसके बाद अपने सामने पूज्य गुरुदेव का सुन्दर चित्र स्थापित कर दे यदि उनकी मूर्ति हो तो, मूर्ति स्थापित करें। फिर गुरुदेव को आवाहन करें एवं एक चौकी पर पीला आसन बिछाकर उस पर गुलाब के पुष्प की पंखुड़ियां बिछाकर उन्हें आसन प्रदान करें तत्पश्चात मंत्र जप करें।

भगवान शिव ने स्पष्ट करते हुए कहा है कि गुरु जो मंत्र दे उसी को ''गुरु मंत्र'' कहा जाता है और पूर्ण श्रद्धा युक्त एक लाख गुरु मंत्र जप करें। साथ ही साथ पांचों अंगों के साथ पुरश्चरण करें। ये पांच अंग हैं - (1) होम, (2) तर्पण, (3) अभिषेक, (4) अपने कुल के विप्र की भोजन और (5) गुरु को दक्षिणा। ये पांचों पंचांग कहलाते हैं और इनके साथ ही पुरश्चरण करते हुए मंत्र जप करना चाहिए।

***अनैन क्रम मार्गेण पुरश्चर्या समापयेत्।***
***ततः सिद्धो भवेद् देवि नान्यथा मम भाषितम्॥***

भगवान शिव कहते हैं कि हे देवी पार्वती! इस क्रम से यह पुरश्चरण प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए और ऐसा करने पर वह साधक स्वयं ही पूर्ण सिद्ध बन जाता है और आगे की प्रत्येक साधना में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

### गुरु मंत्र

***॥ ॐ परमतत्वाय नारायणाय गुरूभ्यो नमः॥***

उपरोक्त गुरु मंत्र है, जो कि शिष्य के लिए तो ''मंत्र राज'' कहा गया है, मगर इसके साथ ही साथ साधक को कुछ और जानकारियां भी प्राप्त कर लेनी चाहिए जो कि अत्यंत गोपनीय है।

भगवान शिव पार्वती को पुरश्चरण पद्धति समझाते हुए कहते हैं कि -

***प्रणव त्रयमुद्धृत्य माया बीज समुद्धरेत्***
***ततः प्रणवमुद्धृत्य एवमेतत् सु-दुर्लभम्***
***एतां सप्ताक्षरी विद्यां प्रजप्य दशधा प्रिये***
***यः पश्येद् ग्रहण देवि! प्रायश्चितं न विद्यते॥***

अर्थात् सर्वप्रथम तीन प्रणव का उद्धार कर माया बीज को स्पष्ट करे और पुनः तीन प्रणव स्पष्ट करें जिसे कि अत्यंत गोपनीय और दुर्लभ मंत्र कहा गया है यह सप्ताक्षरी मंत्र गुरु मंत्र से पहले तीन माला नित्य मंत्र जप करना चाहिए। यह इस प्रकार से मंत्र बनता है -

***॥ ॐ ॐ ॐ ह्रीं ॐ ॐ ॐ ॥***

इसे **'सिद्ध विद्या मंत्र'** भी कहा गया है, यदि

साधक गृहस्थ हो और जीवन में सम्पूर्ण भोगों का भोग करना चाहता हो तो अत्यंत परम '**दुर्लभ भोग मंत्र**' भी स्पष्ट करना चाहिए। मेरी राय में साधकों को सबसे पहले उपरोक्त सप्ताक्षरी मंत्र की तीन माला मंत्र जप करना चाहिए फिर मूल गुरु मंत्र का कुल एक लाख मंत्र जप करना है जो कि साधक पांच, सात या नौ दिन में सम्पन्न करे, परंतु प्रत्येक दिन गुरु पूजन कर पहले सप्ताक्षरी मंत्र की तीन माला मंत्र जप करे, फिर मूल गुरु मंत्र करे और उसके बाद निम्न "भोग मंत्र" का जप तीन माला मंत्र जप करें।

**ऐश्वर्य प्राप्ति मंत्र**

*।। ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ।।*

इस प्रकार यह मंत्र जप सम्पन्न होता है, भगवान शिव कहते है, कि ये दोनों ही मंत्र दिखने में सामान्य प्रतीत होते है, परन्तु यदि इन मंत्रों को सही ढंग से जपा जाए तो वह सभी दृष्टियों से पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

*बहु-भाग्येन चार्वांगि लौकेभर्रतवासिभिः*
*प्राप्ति मात्रेण अप्रव्यं तत् सर्वक्षय भवेत्।।*

अर्थात् हे, पार्वती भारतवासियों के लिए इससे ज्यादा श्रेष्ठ और दुर्लभ मंत्र नहीं है, इसको जपने पर समस्त प्रकार के दोष क्षय होते है और उसका सभी दृष्टियों से पूर्ण भाग्योदय होता है।

## पुरश्चरण यंत्र

**भगवान शिव कहते हैं, कि जब इस प्रकार से मंत्र जप पूरा हो जाए तब पहले से ही प्राप्त सिद्ध दुर्लभ सूर्य के समान तेजस्वी पुरश्चरण यंत्र (धारण) जो कि सामने पात्र में गुरु के सामने रखा हुआ होता है, उसका संक्षिप्त पूजन करे और उसे धारण कर ले।** ऐसा करने पर उसके जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्णता सफलता और श्रेष्ठता प्राप्त होने लगती है, उसके पिछले जीवन के और इस जीवन के समस्त पाप दोष समाप्त हो जाते है और पूर्ण रूप से वह अपने पूज्य गुरुदेव को प्राप्त करता हुआ उसमें लीन हो जाता है।

*यत् यत् कर्म कृतं देवि पुरश्चरणमुत्तमम्*
*तत् सर्व नाशमायाति मम तुल्यो भवेत् यदि।।*

अर्थात् इस प्रकार से परम दुर्लभ पुरश्चरण यंत्र को पहले से ही प्राप्त कर साधक को पूजन कर धारण कर लेना चाहिए तो उसके पाप और दोष नाश हो जाते है और भगवान शिव कहते है कि वह साधक मेरे समान हो जाता है।

*सपत्नीकं गुरूं देवं पूजयेद यस्तु साधकः*
*अनेन विधिना देवि सपूज्य गुरु देवतम्*
*भावयेच्च सपत्नीकं पूजयेद् गुरुमाज्ञया*
*सदैव सहसा सिद्धिर्जायते वीर-वन्दिते।।*

इस प्रकार संभव हो तो गुरुधाम जाकर पूज्य माताजी एवं गुरुदेव का आशीर्वाद प्राप्त करें और उनकी आज्ञा का पालन करें तो निश्चय ही पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है। यदि वहाँ नहीं जा सकें तो पूज्य सद्गुरुदेव एवं माताजी के संयुक्त चित्र का पूजन कर सफलता हेतु प्रार्थना करें एवं गरीबों को भोजन करा दें।

**इस साधना में पुरश्चरण माला का ही प्रयोग किया जाना चाहिए, यह माला विविध मनकों से गुंथी हुई होती है** तथा इसका प्रत्येक मनका पुरश्चरण मंत्र से सिद्ध और प्रामाणिक होता है, इस प्रकार की दुर्लभ माला गुरुधाम से प्राप्त कर सकते हैं।

साधना काल में तो इस माला का प्रयोग किया जाना ही चाहिए। साधना के बाद इस माला को यदि हम पहिने रहे, तो वह जीवन का सौभाग्य ही होगा, क्योंकि इससे दैनिक होने वाले दोष और पाप स्वतः ही समाप्त होते रहेंगे और साधक का चित्त निर्मल और दिव्य बना रहेगा।

उच्चकोटि के जो संन्यासी और योगी होते है, जो अपने आपमें श्रेष्ठ साधक होते है, वे इस पुरश्चरण माला को हर हालत में प्राप्त कर इसके माध्यम से पुरश्चरण प्रयोग तो सम्पन्न करते ही है, नित्य एक या दो घण्टों के लिए इस माला को धारण भी करते है जिससे कि पिछले दिन या उस दिन किये गये सभी दोष समाप्त हो जाते है और वह साधक निर्मल और दिव्य बना रहता है।

वास्तव में ही यह पुरश्चरण प्रयोग अपने आपमें अत्यंत ही महत्वपूर्ण और दुर्लभ प्रयोग है, साधकों को चाहिए कि वे इस साधना को अवश्य ही सम्पन्न करे, जिससे कि वे अपने जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्ण सिद्धि प्राप्त कर सके।

**पुरश्चरण यंत्र (धारण), पुरश्चरण माला-660/-**